

Chapter 6

Initiative

पहल

We have been talking about fear, and I think if we can go more deeply into it, perhaps we shall awaken to initiative. Do you know what that word initiative means? To initiate means to begin. I will explain further as I go along.

Don't you think that in old countries like India—because of various things like climate, overpopulation, and poverty—tradition and authority control thinking? Have you not noticed in yourself how you want to obey your teacher, obey your parents or your guardians, to follow an ideal, follow a guru? The spirit of obedience, the following, the being told what to do—that creates an authority, does it not? You know what 'authority' is? It implies someone to whom you look up, someone whom you want to obey, to follow. Because you yourself are afraid, because you yourself are uncertain, you create an authority. And by the creation of authority, you not only follow but you want others to follow; you take a delight in following and in forcing others to follow.

I do not know if you have noticed in yourself that behind this desire to obey, to follow, to imitate, to comply with somebody else's wishes, is fear—fear of not doing the right thing, fear of going wrong. So, authority

हम लोग भय के बारे में चर्चा करते रहे हैं और मेरा विचार है कि यदि हम इसमें और गहराई तक जा सकें, तब शायद हममें पहल के बारे में समझ उजागर हो पाए। क्या आप जानते हैं कि पहल करने का अर्थ क्या होता है? पहल करना यानी अपनी ओर से शुरुआत करना। जैसे-जैसे मैं इस पर बातचीत करूंगा, मैं इसे और भी स्पष्ट करता चलूंगा।

क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि भारत जैसे प्राचीन देशों में--जलवायु, जनसंख्या, गरीबी आदि कारणों से--परंपरा और सत्ता-प्रामाण्य का सोच-विचार पर नियंत्रण रहा है? क्या आपने खुद ही इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि कैसे आप अपने शिक्षक, माता-पिता और अभिभावक की आज्ञा के अनुसार चलना चाहते हैं, किसी आदर्श, किसी गुरु का अनुसरण करना चाहते हैं? आज्ञापालन करने की यह गहरी भावना, अनुकरण की यह प्रवृत्ति, इस बात की ज़रूरत महसूस करना कि कोई हमें बताए कि हमें क्या करना है--क्या यही सत्ता को जन्म नहीं देता है? क्या आप जानते हैं कि 'सत्ता' क्या है? इसका तात्पर्य है कोई ऐसा जिससे आप दिशा-निर्देश पाने की उम्मीद करते हों, जिसकी आज्ञा को पूरा करना चाहते हों, जिसका अनुकरण करना चाहते हों। चूंकि आप खुद ही भयभीत हैं, क्योंकि आप खुद दुविधा में हैं, इसलिए आप किसी सत्ता का निर्माण कर लेते हैं। और एक बार इस प्रकार की कोई सत्ता खड़ी कर लेने के बाद आप केवल उसका अनुकरण ही नहीं करते बल्कि आप यह चाहने लगते हैं कि अन्य लोग भी वैसा ही करें, स्वयं अनुकरण करने में तथा दूसरों को भी अनुकरण करने के लिए बाध्य करने में आपको एक तरह का आनंद आने लगता है।

मैं नहीं जानता कि आपने कभी अपने आपमें इस बात पर ध्यान दिया है या नहीं, कि आज्ञापालन करने की इस इच्छा के मूल में, अनुकरण करने, नकल करने, किसी अन्य की इच्छाओं को यथावत पूर्ण करने के पीछे भय छिपा होता है--यह भय कि कहीं अनुचित कार्य न हो जाए, भूल न हो जाए। इसलिए सत्ता-प्रामाण्य किसी भी प्रकार की स्वतःप्रेरणा को, पहलकदमी को, खत्म कर देता है। पहलकदमी का अर्थ

Chapter 6

gradually kills any kind of initiative—which is, to know how to do something easily, spontaneously, freely, out of yourself. Most of us lack that because the sense of creativity is being destroyed in us. For instance, you may initiate some mischief of your own, you may tear up, destroy, create some mischief, but that feeling of doing something for yourself, out of yourself, without being asked, without being told what to do, that spirit of initiative is lost because you are always surrounded by authority, by the older generation who seem to think they know what they are about—although they do not—and who control you. So gradually, the sense of doing things because you love to do them goes out of yourself and is destroyed.

Have you ever walked down the road and picked up a stone that is in the way, picked up a piece of paper or torn rag, or planted a tree which you will care for? When you have not been told to do these things, you do them yourself, naturally; that is the beginning of initiative. When you see something to be mended, you mend it; when you see something that has to be done, without being told what to do, you do it, either in the kitchen or in the garden or in the house or on the road. Your mind gradually becomes free from fear, from authority, so you begin to do things yourself. I think it is very important to

होता है यह जानना कि किसी भी कार्य को सरलतापूर्वक, स्वाभाविक तरीके से, स्वतंत्रतापूर्वक स्वयं ही कैसे किया जाए। हममें से अधिकांश में यह कमी इसलिए होती है क्योंकि हमारे अंदर की सृजनात्मकता को निरंतर खत्म किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, आप जिन अधिकार संपन्न लोगों से घिरे हैं, पुरानी पीढ़ी के वे लोग, जो यह समझते हैं कि उन पर जो उत्तरदायित्व है और जिसे वे बखूबी निभाना जानते हैं--हालांकि वे कुछ भी नहीं जानते--और जो आपको नियंत्रित कर रहे होते हैं, उन्हें यह लगता है कि यदि आपको अपने से कुछ करने दिया जाए तो आप कुछ-न-कुछ शैतानी करेंगे, तोड़-फोड़, बर्बादी, उपद्रव करेंगे, नुकसान करेंगे। लेकिन इस प्रकार अपनी ओर से कुछ करने की जो सहज प्रेरणा आपमें होती है, बिना किसी से पूछे, बिना किसी के द्वारा आपको यह बताए जाने के कि आपको क्या करना है--कुछ करने की जो उमंग आपमें होती है वह खो जाती है। इसलिए धीरे-धीरे, किसी भी कार्य को करने की जो भावना आपमें इसलिए होती है कि आपको उन कामों को करना अच्छा लगता है, लुप्त होने लगती है, खत्म हो जाती है।

क्या सड़क पर चलते हुए ऐसा हुआ है कि रास्ते पर पड़े किसी पत्थर को, कागज के टुकड़े को या फटे-पुराने कपड़े को आपने उठाकर एक ओर रख दिया हो, या अपनी ही खुशी से कोई पौधा लगाया हो और उसकी देखभाल की हो? हालांकि यह सब करने के लिए आपसे कोई कहता नहीं पर आप अपनी रुचि से इसे करने लगते हैं, यही है पहल करना। जब आपको ऐसा लगता है कि किसी चीज़ को ठीक करना ज़रूरी है तो आप उसे ठीक करने लगते हैं, जब आपको लगता है कि कोई काम किया जाना है तो बिना इसके कि कोई आपको बताए कि क्या करना है आप उसे करते हैं, भले ही वह काम आपके रसोईघर का हो, बगीचे का हो या सड़क का ही क्यों न हो। धीरे-धीरे आपका मन भय से मुक्त होने लगता है, सत्ता से मुक्त होने लगता है, फिर आप बहुत से काम अपने आप ही करना शुरू कर देते हैं। मैं सोचता हूँ कि जीवन में ऐसा करना बहुत महत्त्व रखता है, अन्यथा आप केवल ग्रामोफोन बन कर रह जाते हैं--एक ही धुन को बार-बार दोहराते चले जाते हैं और स्वतंत्रता की भावना को पूरी तरह खो देते हैं।

Chapter 6

do that in life; otherwise, you become mere gramophones, playing over and over again the same tune, and so you lose all sense of freedom.

But the older generation, the past generation, because of their nervous desires, their fears, their apprehensions of insecurity, want to protect you; they want to guide you; they want to hold you in fear, and through fear they gradually destroy in you the freedom to do things, to make mistakes, to find out, so that you begin to lose this extraordinary thing called initiative. Please ask your teachers about all this. You see how very few of us have that freedom—freedom not merely to do things but freedom out of which we want to do things. When you see somebody carrying a great weight, you want to help him, don't you? When you see the dishes being washed, you want to do it yourself sometimes. You want to wash your own clothes, you want to do things out of freedom. Do you know what that means? If one goes into it very deeply, you will find an extraordinary creativity coming into being.

Truth is not something very far away, to be sought after, to be struggled and searched for. If you have freedom from the very beginning, from childhood, you will find as you mature and grow that there is initiative to do things spontaneously, easily, naturally, without being told

लेकिन पुरानी पीढ़ी, अतीत की पीढ़ी, अपनी भावुक इच्छाओं के कारण, अपने भयों के कारण, असुरक्षा की आशंकाओं के चलते आपको सुरक्षा देना चाहते हैं--वे आपको मार्गदर्शन देना चाहते हैं, आपको भयग्रस्त रखना चाहते हैं और भय के माध्यम से वे इस प्रकार अनेक कार्यों को स्वयं करने की, भूलें करने की, खोज-बीन करने की आपकी सहज स्वतंत्रता को धीरे-धीरे नष्ट कर डालते हैं, जिसके चलते आप इस असाधारण गुण को, पहलकदमी के साहस को, खोने लगते हैं। कृपया अपने अध्यापकों से इस सब के बारे में पूछिए। यह तो आप देख ही पा रहे होंगे कि हममें से कितने कम लोग वैसी स्वतंत्रता का लाभ ले पाते हैं--केवल तमाम तरह की गतिविधियों की स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि उस स्वतंत्रता का भी जिसमें कुछ नया करने की चाह पैदा होती है। जब आप देखते हैं कि कोई व्यक्ति अकेला ही भारी बोझ लाद कर ले जा रहा है तो आप उसकी मदद करना चाहते हैं, चाहते हैं न? जब आप यह देखते हैं कि बर्तनों को साफ किया जा रहा है तो कभी-कभी आप स्वयं भी यह काम करना चाहते हैं। आप अपने कपड़े खुद धोना चाहते हैं, आप स्वतंत्र होकर काम करना चाहते हैं। क्या आपको मालूम है कि इसका मतलब क्या है? यदि आप इस संबंध में सावधानी से अन्वेषण करें तो आप पाएंगे कि एक असाधारण सृजनशीलता आपमें जन्म ले रही है।

सत्य कोई बहुत दूर स्थित वस्तु नहीं है, जिसे खोजने की ज़रूरत हो, जिसे पाने के लिए संघर्ष किया जाए, जिसे इधर-उधर ढूंढा जाए। यदि बिलकुल शुरू से ही, बचपन से ही आपको स्वतंत्रता प्राप्त है तो आप पाएंगे कि जैसे-जैसे आप परिपक्व होते हैं, विकसित होते हैं, वैसे-वैसे आपमें सभी बातें करने की उमंग बिना किसी के यह बताए कि क्या करना है, अपने आप, सरलता से, नैसर्गिक रूप से आने लगती है। कविता लिखना, निर्भीक रहना, तारों को देखना, अपने मन को भटकने

Chapter 6

what to do. It is creative to write a poem, to be unafraid, to look at the stars, to let your mind wonder, to look at the beauty of the earth and the astonishing things that the earth holds. To feel all this is really an extraordinary activity, and you cannot feel it without that freedom, without that sense of initiative in which there is no authority, in which you do not obey merely because you are told what to do but do things naturally, freely, easily, happily.

As you go into it, you will see that you begin to take a tremendous interest in everything, in the way you walk, in the way you talk, in the way you look at people, in the feelings you have—because all these things matter very much. If you have cultivated intelligence, this sense of freedom, all the time while at school, then a few months of intense study will be sufficient for you to pass your examinations. But now, what you are doing is to be concerned all the time with studies, with books, and you do not know what is happening all around you.

Have you watched those village women carrying weights on their heads—cow-dung cakes, wood, hay, or fodder? How extraordinarily beautiful is their walk! Have you watched the so-called well-to-do people? Do you notice how heavy they grow and how dull, because they do not look at anything? They

देना, धरती के सौंदर्य को देखना और इस धरती के अद्भुत घटनाक्रम को देखना सृजनशीलता है। इस सब को महसूस कर पाना सचमुच एक असाधारण क्रियाशीलता है, और इसे आप उस स्वतंत्रता के बिना, उमंग की उस भावना के बिना नहीं महसूस कर सकते जिसमें किसी सत्ता और अधिकारवादिता के लिए कोई जगह नहीं होती, जिसमें आप बस आज्ञापालन करने के लिए कोई काम नहीं करते, बल्कि सब कुछ अपने से, सहज ढंग से, स्वतंत्रतापूर्वक, सरलता और प्रसन्नता से करते हैं।

जब आप इस बारे में गहराई से विचार करेंगे तो देखेंगे कि आप प्रत्येक चीज़ में गहन अभिरुचि लेने लगे हैं: आप किस प्रकार चलते हैं, किस प्रकार बातचीत करते हैं, लोगों को किस तरह देखते हैं और आपके हृदय में कौन सी भावनाएं उठती हैं—क्योंकि इन सभी बातों का बहुत अधिक महत्त्व है। यदि विद्यालय में पढ़ते समय आप में मेधा उपजी है, स्वतंत्रता की ऐसी भावना जन्मी है, तो कुछ महीनों के श्रमपूर्वक अध्ययन से ही आप अपनी परीक्षाएं उत्तीर्ण कर पाएंगे। लेकिन वर्तमान स्थिति यह है कि आप सारा समय अपनी पढ़ाई और पुस्तकों की चिंता करने में ही बिता देते हैं और आपको पता ही नहीं रहता है कि आपके आस-पास क्या-क्या हो रहा है।

अपने सिरों पर गोबर के कंडों का, लकड़ियों का, घास-चारा इत्यादि का भारी बोझ लादकर आनेवाली उन ग्रामीण स्त्रियों की ओर आपने कभी देखा है? उनकी चाल में कैसी असाधारण सुंदरता होती है! क्या आपने तथाकथित खुशहाल लोगों को ध्यानपूर्वक देखा है? आपने कभी इस पर ध्यान दिया है कि वे कैसे बेडौल और मोटे हो जाते हैं, क्योंकि वे कभी किसी बात का अवलोकन नहीं करते। क्योंकि उन्हें केवल अपनी छोटी-मोटी चिंताओं से और अपनी इच्छाओं से मतलब होता है, उन्हें केवल यही चिंता रहती है कि वे

Chapter 6

are concerned only with their petty worries and their desires and with how to control their fears and their appetites, so they live in fear, and living in fear, they have to follow somebody, to obey, so that they create authority—the authority at one level of the policeman, of the lawyer, of the government, and also the spiritual authority of books, of leaders, of gurus—so that, in themselves, they lose the beauty of living, of suffering, of understanding.

That is why it is very important that while you are at this school, you should understand all these things. Go out one day and plant a tree and look after it all the time you are here. Find out what kind of tree to plant, what kind of manure to give it, and look after it. Then you will see something happening to you; you are close to the earth and not merely close to books. You will not be interested in books after you get a job; after you pass your examination you will never look at another book. But there are trees, numerous flowers, living animals all around. If you do not have sensitivity to all these, you lose initiative and your minds become very small, petty, trivial, jealous, envious. It is very important while you are at this school to consider all these things, so that your minds become awakened to them.

You know, scientists say that we are only functioning 15

अपने भयों और लालसाओं पर कैसे संयम रखें और इसलिए वे भयभीत रहते हैं, और भय में जीते हुए किसी-न-किसी मनुष्य का अनुसरण करने के लिए, उसकी आज्ञा पर चलने के लिए मजबूर होते हैं, और इसी कारण वे सत्ता का निर्माण कर लेते हैं—एक ऐसी सत्ता जो एक तरफ पुलिस, कानूनी सलाहकार, सरकार आदि के रूप में होती है तो दूसरी तरफ आध्यात्मिक सत्ता के रूप में, ग्रन्थों, नेताओं और गुरुओं के रूप में होती है—और इस प्रकार से, अपने स्वयं के भीतर उनमें जीवन की, पीड़ाओं की और समझने-बूझने की सारी सुंदरता खो जाती है।

इसलिए यह बात अत्यंत ज़रूरी है कि इस विद्यालय में रहते हुए आप इन सभी चीज़ों को समझें। किसी दिन समय निकाल कर एक पौधा लगाइए और जब तक यहां हैं उसकी देखभाल कीजिए। इसका पता लगाएं कि किस प्रकार का पौधा यहां लगाया जाना चाहिए, उसे किस प्रकार की खाद आदि दी जानी होगी और उसकी ध्यान से देखभाल करें। तब आप पाएंगे कि आपके भीतर कुछ होने लगा है, आप केवल किन्हीं किताबों के ही नहीं, बल्कि धरती के भी निकट संपर्क में हैं। किसी काम में लग जाने के बाद पुस्तकों में आपकी रुचि शेष नहीं रहेगी, आपकी परीक्षाएं हो जाने के बाद आप उन पर नज़र तक न डालेंगे। लेकिन ये वृक्ष, ये ढेर सारे फूल, और जीवंत पशु-पक्षी सदैव आसपास रहते हैं। यदि आपमें इन सब के लिए संवेदनशीलता नहीं है तो आपमें उमंग नहीं होगी और आपके मन अत्यंत क्षुद्र, तुच्छ, सतही, ईर्ष्यालू और द्वेषपूर्ण हो जाएंगे। जब तक आप इस विद्यालय में हैं, तब तक यह बहुत आवश्यक है कि आप इन सभी चीज़ों पर ध्यान दें, ताकि आपके मन उनके प्रति खुल सकें।

वैज्ञानिक कहते हैं कि हम अपनी क्षमता का १५ प्रतिशत ही इस्तेमाल करते हैं। हम अपनी कुल सामर्थ्य

Chapter 6

percent. Our capacity to think is only 15 percent; probably, if we learned to function 50 percent we would do much more mischief. But without cultivating sensitivity, understanding, affection, kindness, even with the 15 percent capacity we do a great deal of damage and mischief, and with 50 percent capacity but no kindness, we would do monstrous things.

If you understand all this, there comes a feeling of freedom from fear. How can you understand if you just listen to these talks and forget them? Do not listen to them that way. Listen so that you can live without fear, without following somebody; listen to be free, not when you are old, but now.

To be free requires a great deal of intelligence. You cannot be free if you are a stupid person. Therefore, it is very important to awaken your intelligence while you are very young, and that intelligence cannot be when you are frightened, when you are following, when you want somebody to obey you or when you yourself obey somebody. All this requires a great deal of thinking over, and that is real education. The education that most of us now get is only superficial.

का १५ प्रतिशत ही सोचने में लगा पाते हैं, और यदि हम अपनी क्षमता का ५० प्रतिशत इस्तेमाल करना सीख जाते तो शायद हम बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी कर लेते। लेकिन यदि हम संवेदनशीलता, समझ, स्नेह और उदारता का पोषण न करें तो इस १५ प्रतिशत क्षमता से भी हम बहुत अधिक नुकसान और उपद्रव कर बैठेंगे, और यदि ५० प्रतिशत क्षमता हो जाए और हममें दयालुता न रहे तो हम न जाने क्या-क्या भयावह कृत्य कर डालेंगे।

यदि आप यह सब समझ रहे हैं तो आपमें भय से मुक्ति की भावना जाग्रत होगी। लेकिन यदि आप बस इन वार्ताओं को सुनते भर हैं और भूल जाते हैं, तो यह सब आप कैसे समझ पाएंगे? इन्हें आप इस तरह मत सुनिये। इन्हें इस प्रकार सुनिये कि आप निर्भयतापूर्वक जी सकें, किसी का अनुसरण किए बिना जी सकें, इस प्रकार सुनिये ताकि आप अभी से अपने को मुक्त पाएं, न कि बुढ़ापे का इंतज़ार करें।

स्वतंत्र हो पाने के लिए बहुत अधिक प्रज्ञावान होना पड़ता है। यदि आप मूर्ख हैं तो आप स्वतंत्र नहीं हो सकते। इसलिए बहुत महत्त्वपूर्ण है कि जब आप बहुत छोटी उम्र के हों तब ही अपनी प्रज्ञा को जाग्रत हो जाने दें। लेकिन जब आप डरे हुए हैं, जब किसी का अनुसरण कर रहे हैं या किसी की आज्ञा के अनुसार चल रहे हैं तो प्रज्ञा का जागना संभव नहीं है। यह सब समझने के लिए अत्यधिक विचार करने की ज़रूरत है और यही वास्तविक शिक्षा है। इस समय जैसी शिक्षा हममें से अधिकांश पा रहे हैं वह बेहद सतही है।